www.pdgroup.in
E-mail : publisher@pdgroup.in

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 36 द्वादश अंक
जुलाई 2023

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
15 आर्थिक परिदृश्य
17 राष्ट्रीय परिदृश्य
21 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

24 क्रीड़ा जगत्
27 बाल एवं महिला विकास के सम्बन्धित योजना/कार्यक्रम
30 विज्ञान समाचार
33 बढ़ती आबादी, बढ़ती चुनौतियाँ
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

युवा प्रतिभाएं

36 कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में इंस्पेक्टर ऑफ जीएसटी एण्ड सेन्ट्रल एक्साइज के पद पर चयनित —श्रृति सिंह
37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
40 सारभूत तत्व कोष

लेख

43 **विदेश व्यापार लेख**—भारत के रक्षा निर्यात की सुधरती स्थिति
44 **सामयिक लेख**—नए सूचना प्रौद्योगिकी नियम और फेक न्यूज पर नियंत्रण
45 **पारिस्थितिकी लेख**—जलवायु परिवर्तन का खेती पर प्रभाव
47 **राष्ट्रभाषा लेख**—देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिन्दी की भूमिका
48 **विरासत लेख**—प्रतिहार वास्तु कलाओं का पौराणिक व धार्मिक महत्व
50 **अन्तरिक्ष लेख**—इसरो की सफलता के नए आयाम
52 **स्वास्थ्य लेख**— भारतीय स्वास्थ्य तंत्र में डिजिटल सेवा का महत्व
53 **जलवायु-परिवर्तन लेख**— भारत पर बढ़ते तापमान का प्रभाव
55 **नवाचार लेख**— आत्मनिर्भर भारत के नए क्षितिज
58 **याददाश्त लेख**—स्मरण शक्ति कैसे बढ़ाएँ ?
59 **कृषि एवं पशुपालन लेख**—2011-12 से 2020-21 के दशक के दौरान पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्रक में उल्लेखनीय प्रगति
60 कॅरियर सलाह

हल प्रश्न-पत्र

64 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2022
73 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल परीक्षा, 2021
82 एस.एस.सी. कॉंस्टेबिल (जी.डी.) भर्ती परीक्षा, 2022

मॉडल हल प्रश्न

90 आगामी बिहार राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के तहत् विशेष सर्वेक्षण लिपिक पद हेतु विशेष हल प्रश्न
101 आगामी राजस्थान सूचना सहायक सीधी भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
107 आगामी बी.पी.एस.सी. प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

123 वर्षान्त समीक्षा 2022— सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

सम्पादकीय

शिष्ट-व्यवहार के धनी बनिए

"Ethics, Decency & Morality are priceless, they know no class but possessing them shows true class."

— Roland Adam

स्वामी रामतीर्थ के इन शब्दों में जीवन का सार भरा है. ताश के पत्ते ईश्वर ने बाँटे हैं और खेलना हमें हैं, कैसे खेलें ? इस प्रश्न के हल करने के लिए उसने हमें 'बुद्धि' दी है. मनुष्य के अन्दर गुण व अवगुण दोनों होते हैं. किस प्रकार गुण का इस्तेमाल करके हम पत्ते खेलें और उसमें जीत हासिल करें, यह हमारी बुद्धि पर निर्भर करता है. जीत और हार में अच्छे बुरे का फासला है. अगर अच्छी तरह से कार्य का प्रदर्शन करेंगे, तो हम जीतेंगे और खराब प्रदर्शन से हारेंगे. अच्छा प्रदर्शन करने के लिए जरूरी है स्वयं का अच्छा होना, अर्थात् शिष्ट-व्यवहार का धनी होना.

जो अपने व्यवहार से दूसरे को पल भर के लिए स्वर्ग–जैसा आनंद का स्वाद चखा दे, वह वास्तव में शिष्टाचार का धनी है. सहिष्णुता (Forbearing), उदारता (Generosity), विनम्रता (Humility), और शालीनता (Complacency) जैसे गुण मनुष्य को देवतुल्य बना देते हैं, क्योंकि वे अहंकार-शून्य होते हैं.

अपने पुरी 'ओडिशा' प्रवास काल में एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथजी के मंदिर में 'गरुड़ स्तम्भ' के सहारे खड़े होकर दर्शन कर रहे थे. एक स्त्री श्रद्धालुओं की भीड़ को चीरती हुई देव-दर्शन हेतु उसी स्तम्भ पर चढ़ गई और अपना एक पाँव महाप्रभुजी के दाएं कंधे पर रखकर दर्शन करने में लीन हो गई. यह दृश्य देखकर उनका एक भक्त घबराकर धीमे स्वर में बोला, ''हाय, सर्वनाश हो गया, जो प्रभु स्त्री के नाम से दूर भागते हैं, उन्हीं को आज एक स्त्री का पाँव स्पर्श हो गया, न जाने अब वे क्या कर डालेंगे ?'' वह उस स्त्री को नीचे उतारने के लिए आगे बढ़ा ही था कि उन्होंने सहजभावपूर्ण शब्दों में उससे कहा–''अरे नहीं, इसको भी जी भरकर जगन्नाथजी के दर्शन करने दो. इस देवी के तन-मन में कृष्ण समा गए हैं, तभी यह इतनी तन्मय हो गई कि इसको न तो अपनी देह और न मेरी देह का ज्ञान रहा... अहा ! इसकी तन्मयता को धन्य है, इसकी कृपा से मुझे भी ऐसा व्याकुल-प्रेम हो जाए.''

यह है शिष्ट-व्यवहार की एक अनूठी मिसाल, जिसमें **सहिष्णुता, उदारता, विनम्रता, प्रसन्नता, शिष्ट-व्यवहार** जैसे गुण भरे हैं. ऐसे व्यक्ति की संगति में दूसरे लोगों की दुष्प्रवृत्ति अपने-आप विलुप्त हो जाती है. **श्री चैतन्य महाप्रभु** ने कहा है– **''मनुष्य को आचार-व्यवहार में तृण से भी नम्र, वृक्ष से भी अधिक सहनशील और निराभिमानी होकर दूसरों को मान देना चाहिए.''** यह सफलता का मूलमंत्र है.

●●●